Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

साहित्यिक विमर्श

'मैं कवि हूँ'

मैं कवि हूँ
इसलिए प्रगतिशील हूँ
धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व
आदि भाव हैं मेरे अंदर
लेकिन हां!
मानता हूँ 'वरनाश्रम निज–निज धरम' को
अपने मज़हब को समझता हूँ
औरों से श्रेष्ठ!

मैं कवि हूँ
इसलिए सच्चा दलित–विमर्शकार हूँ
बात करता हूँ स्त्री हक की
लेकिन हाँ!
किसी नीच का छुआ नहीं खाता
मेरे पड़ोसी सवाल करते हैं मुझसे
तुम्हारी पत्नी चीखती–चिल्लाती है क्यों
अक्सर रात को?

मैं कवि हूँ
इसलिए जातिवादी नहीं हूँ
मैं तो हूँ साम्यवादी और अम्बेडकरवादी
लेकिन हाँ!
विश्वास रखता हूँ वर्ण और नस्लीय श्रेष्ठता में
लेकर घूमता हूँ झोले में
राष्ट्रवाद का सर्टिफिकेट!

एकलव्य सुनो

एकलव्य सुनो!
हमें संदेह नहीं है
तनिक भी तुम्हारे हुनर पर
फिर भी
तुम नहीं हो जिंदा
हमारी चेतना में
न हमारे संघर्ष में
नहीं मानते हम तुम्हें
अपना मुक्तिदाता व नायक।
हम मानते हैं
लम्पट द्रोणाचार्य ने किया था
छल तुम्हारे साथ
पर क्या मर गयी थी
तुम्हारी चेतना?
क्या मर गया था
तुम्हारा स्वत्व?
एकलव्य! सुनो
अपना अंगूठा काटने के बदले में
काटते अंगूठा
छली द्रोण का तुम
लड़ते अपनी अस्मिता की खातिर
तो हम मानते तुमको
अपना मसीहा
अपना महानायक!

रामबचन यादव 'सृजन'
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
rambachanyadav10081988@gmail.com
मो0 9453087972